

प्रतिवेदन

व्यवस्था का प्रतीक नाटक "पालने का पूत"

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के हिंदी विभाग तथा साहित्य एवं नाट्य समिति के तत्वाधान में शहीद वीरनारायण सभागार में छत्तीसगढ़ कला-साहित्य अकादमी एवं दुर्ग की नाट्य संस्था मस्त द्वारा कश्मीरी लेखक-नाटककार मोतीलाल क्यूम द्वारा लिखित नाटक 'पालने का पूत' प्रस्तुत किया गया। नाटक का निर्देशन रंगकर्मी राकेश बमबाई ने किया था। नाटक का शीर्षक गीत रजनीश उमरे तथा कथात्मक गीत लक्ष्मीनारायण कुंभकार के थे। यह कार्यक्रम के संयोजक मणिमय मुखर्जी एवं बबलू विश्वास थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने स्वागत भाषण में नाटक की परंपरा तथा उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित अतिथियों एवं कलाकारों का स्वागत किया। छत्तीसगढ़ कला-साहित्य अकादमी वरिष्ठ उपाध्यक्ष मणिमय मुखर्जी ने अकादमी की गतिविधियों पर चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को नाटक से जुड़कर समाज सेवा करने की बात कही तथा इसके लिए नाट्य कार्यशाला लगाने व उससे जुड़ने का आह्वान किया। महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने कहा कि महाविद्यालय समय-समय पर कला एवं साहित्यिक गतिविधि संचालित करता रहा है। कला एवं संस्कृति के प्रति यह महाविद्यालय प्रतिबद्ध है तथा कला एवं संस्कृति से जुड़ी प्रतिभाओं को महाविद्यालय अवसर और मंच प्रदान करता है जिसे हम आगे भी सतत जारी रखेंगे।

नाटक पालने का पूत एक प्रतीक नाटक है जो व्यवस्था की विसंगतियों को प्रतीक के माध्यम से व्यक्त करते हुए व्यवस्था की कुरीतियों को व्यक्त करते हुए समाधान की तलाश करता है। नाटक के कलाकारों में प्रमुख रूप से उदित नारायण सेन, कमल किशोर रामटेक, असित सागर सेन, सुजल रामटेक, शिवा कुंभकार, सक्षम रामटेक, हंसिका रामटेक, आम्रपाली मेश्राम, नम्रता सेन आदि, नाटक के संगीत पक्ष को पवन कौशिक, दुर्गा सिंह चौहान एवं कवि कुमार संवारा। विद्युत व्यवस्था विद्यानंद मेश्राम तथा बबलू विश्वास ने संभाला।

उक्त संपन्न कार्यक्रम में प्रभारी प्राचार्य डॉ.एस.एन.झा, कवि नासिर अहमद सिकंदर, रंगकर्मी विजय शर्मा, शक्तिपद चक्रवर्ती, गिलबर्ट, राजीव मिश्रा के साथ महाविद्यालय के डॉ. एच.पी. सिंह सलूजा डॉ.बलजीत कौर, डॉ. आर.एस. सिंह, डॉ. तरलोचन कौर, डॉ. अनुपमा कश्यप, डॉ. के. पद्मावती, डॉ. कृष्णा

चटर्जी, डॉ. गोविंद गुप्ता, डॉ. सरिता मिश्रा, डॉ. ओमकुमारी देवांगन, डॉ. शारदा सिन्हा, डॉ. लता गोस्वामी सहित बड़ी संख्या में महाविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन रजनीश उमरे एवं आभार डॉ. ज्योति धारकर ने किया।

प्राचार्य

शास.वि. या. ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

हिंदी विभाग

दिनांक 12/11/2022

प्रतिवेदन

कहानी 'सवा सेर गेहूँ का सच आज भी हकीकत है

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग के हिन्दी विभाग द्वारा स्नातक के पाठ्यक्रम में संकलित कथाकार प्रेमचंद की कहानी सवा सेर गेहूँ पर आधारित फिल्म का प्रदर्शन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन.सिंह के निर्देशन तथा विभागाध्यक्ष डॉ.अभिनेष सुराना के मार्गदर्शन में सर्वपल्ली राधाकृष्णन सभागार में किया गया। फिल्म प्रदर्शन के पूर्व हिंदी विभाग के प्राध्यापक थानसिंह वर्मा ने सभागार में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रेमचंद हिन्दी के पहले कथाकार हैं जिन्होंने ग्रामीण भारत के मजदूर किसान के शोषण उत्पीड़न तथा जीवन संघर्ष को अपनी कथा का विषय बनाया। हिन्दी कथा-साहित्य में प्रेमचंद ने पहली बार सामाजिक यथार्थ को सामने लाया। प्रेमचंद ने कथा-साहित्य का स्वरूप बदल दिया जो महज मन बहलाव के लिए होता था उसे उन्होंने जीवन की वास्तविकता से जोड़कर उद्देश्यपरक बनाया।

कहानी सवा सेर गेहूँ का मुख्य पात्र शंकर भोला-भाला है, जो अपने सहज स्वभाव के कारण एक संत के स्वागत सत्कार के लिए पंडित से साहूकार बने सूदखोर से सवा सेर गेहूँ उधार लेकर षडयंत्र का

शिकार होता है तथा अपना सर्वस्व खोकर बंधवा मजदूर बनने पर विवश हो जाता है। प्रेमचंद जी ने इस कहानी में आर्थिक शोषण के साथ धार्मिक शोषण की परतों का पर्दाफाश किया है। प्रेमचंद ने यह कहानी अपने समय के समाज को देखते हुए 1910 में लिखी थी पर आजादी के इतने वर्षों बाद भी शोषण की यह प्रक्रिया जारी है।

इस फिल्म को देखने के लिए स्नातक प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों में बहुत उत्साह देखा गया। महाविद्यालय के लगभग 400 विद्यार्थियों के साथ शोध छात्र संग्राम सिंह निराला, बेलमती पटेल एवं निर्मला पटेल व हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. बलजीत कौर, डॉ. जयप्रकाश, डॉ. कृष्णा चटर्जी, प्रो.अन्नपूर्णा महतो, डॉ. सरिता मिश्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ रजनीश उमरे ने किया।

प्राचार्य

शास.वि.या. ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

हिन्दी विभाग

दिनांक 23/08/2022

प्रतिवेदन

व्यंग्य परसाई के रचनाओं के भीतर से प्रवाहित होता है- डॉ. जयप्रकाश

परसाई जी 20वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण लेखक थे। उन्होंने अपनी गहन अर्न्तदृष्टि से समाज की विसंगतियों तथा विद्रुपताओं को देखा तथा समाज को अपनी रचनाओं के आईने में दिखाया। उक्त विचार हिन्दी विभाग द्वारा परसाई जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में विभाग के प्राध्यापक डॉ. जय प्रकाश ने व्यक्त किये। उन्होंने आगे कहा कि ऐसा नहीं है कि हिन्दी में परसाई जी अकेले व्यंग्यकार थे परसाई जी से पूर्व कबीर, भारतेन्दु और बालमुकुन्द गुप्त भी सशक्त व्यंग्यकार रहे हैं। परसाई उन सबसे अलग इस अर्थ में हैं कि वे जीवन तथा समाज को वैज्ञानिक तथा तार्किक ढंग से देखते थे, इसीलिए व्यंग्य परसाई जी की रचनाओं के भीतर से प्रवाहित होता है।

महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एम.ए. सिद्दीकी ने कहा कि पुराने जमाने में पढ़ा लिखा उसी को समझा जाता था जो भाषा और गणित जानता हो। साहित्य का संबंध भाषा से है। परसाई जी जैसे साहित्यकार को समझने के लिए भाषा की समझ और संवेदना की आवश्यकता है। प्रो. थानसिंह वर्मा ने कहा परसाई जी की रचनाओं में आजादी के बाद के भारत की तस्वीर देखी जा सकती है। परसाई जी ने राजनीति, धर्म, सम्प्रदाय प्रशासन तथा सामाजिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है। विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने परसाई जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि व्यंग्य विसंगतियों से उपजता है। परसाई जी के व्यंग्य नशतर की तरह चूभने वाले होते हैं, जिसको लक्ष्य किया जाता है वह तिलमिला उठता है। छात्रा सोनाली ने 'ईश्वर की सरकार' तथा मोनिका साहू 'समझौता' नामक परसाई जी के व्यंग्य रचनाओं का पाठ किया।

कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. बलजीत कौर तथा डॉ. कृष्णा चटर्जी एवं अतिथि व्याख्याता डॉ. रजनीश उमरे उपस्थित थे। कार्यक्रम में एम.ए. हिन्दी के अलावा विभिन्न कक्षाओं के साहित्य के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्णा चटर्जी ने तथा आभार प्रदर्शन डॉ. बलजीत कौर ने किया।

प्राचार्य

शास.वि.या.ता. स्नात. स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

हिन्दी विभाग

दिनांक 15/09/2023

प्रतिवेदन

रमाकांत का लेखन जनपक्षधरता के लिए प्रेरित करती हैं
बहुविध अनुभव और बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं कथाकार रमाकांत श्रीवास्तव

छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी और साईंस कॉलेज दुर्ग हिन्दी विभाग द्वारा वरिष्ठ कथाकार रमाकांत श्रीवास्तव पर केन्द्रित दो दिवसीय साहित्यिक आयोजन के दूसरे दिन कथाकार के विविध पक्षों पर वरिष्ठ साहित्यकारों, उनके समकालीन रचनाकारों और सजग पाठकों ने गंभीरता से चर्चा की। रमाकांत श्रीवास्तव का कथा संसार और किशोर मन का यथार्थ पर विषय प्रवर्तन करते हुए उषा आठले ने कहा कि रमाकांत ने संवेदनाओं के साथ मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते को महीनता से चित्रात्मक शैली में उभारा है। उनके पास अद्भुत कल्पना शक्ति है। बच्चू चाचा के किस्से और चाचा का कुत्ता संकलन में हम पीछे छूट गयी संस्कृति को देखते हैं।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुये राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि एक लेखक को हमेशा यह ध्यान रखना चाहिये कि वह क्यों लिख रहा है और किसके लिए लिख रहा है। किशोरों पर केन्द्रित रमाकांत की किताबे लंबी संस्मरणात्मक किताबें हैं, जिनके माध्यम से लेखक ने सांस्कृतिक बदलाव का जिक्र किया है। रमाकांत की संस्मरणों से हमें कभी-कभी अपने से छुट गयी दुनिया को और उसके पास तक जाकर उसे पहचानने का सुख मिलता है। राजीव कुमार शुक्ल ने कहा कि सत्तार्ये हमें क्या पढ़ने को प्रेरित कर रही है? यह हमें सोचना चाहिये। जीवन में एक बेहतर मनुष्य बनने की प्रक्रिया बच्चों में किशोर साहित्य से ही मिलती है। उन्होंने आज के युवाओं को किस तरह पढ़ना और सोचना चाहिये इस पर प्रकाश डाला। अच्छा साहित्य एक दोस्त की तरह होता है। उन्होंने कहा कि रमाकांत की भाषा हमें प्रसन्न करती है। उनकी शैली जीवन से लगाव की, उम्मीद की, आशा की और आश्वस्ति की शैली है।

कथेतर साहित्य का वैभव पर केन्द्रित सत्र में उनके साथ लंबे समय तक खैरागढ़ में रहे, जीवन यदु ने कहा कि बच्चों पर लिखने का अर्थ देश को संस्कार देना है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथा रमाकांत की

अनूठी उपलब्धि है। उन्होंने रमाकांत के व्यक्तित्व के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला और उनसे जुड़े संस्मरणों के माध्यम से लेखक की रचना प्रक्रिया का जिक्र किया। वरिष्ठ आलोचक सियाराम शर्मा ने कहा कि स्मृति मनुष्य का अविभाज्य हिस्सा है। मनुष्य अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य को साथ-साथ जीता है। हम जिन लोगों के साथ जीते हैं, उनसे प्रेम का, विरोध का और बहस का संबंध होता है। रमाकांत के संस्मरणों में यही उभरता है। उन्होंने कहा कि आज ज्ञान के बीच अंतरक्रिया नहीं है, यह आज का बहुत बड़ा संकट है। रमाकांत के संस्मरणों में उनके समकालीन काशीनाथ सिंह, स्वयं प्रकाश, नागार्जुन, महावीर अग्रवाल, कमला प्रसाद, ललित सुरजन आदि सहधर्मियों का संस्मरण है। रमाकांत के संस्मरण एक एलबम की तरह हैं, जिसमें कई तरह के चित्र हैं। वे अपने संस्मरणों में परिचय और भाव भंगिमाओं से पात्र की छवि उभारकर पूरी तरह मूर्त कर देते हैं।

वरिष्ठ कवि एवं समीक्षक बसंत त्रिपाठी ने उनके निबंधों पर केन्द्रित वक्तव्य में कहा कि एक लेखक जिस विधा में जो लिख रहा होता है, उस समय वह मूलतः वही होता है। हमें उनके निबंधों में अपने समय, समाज के प्रश्नों की आकुल चिंतार्ये दिखायी देती है। सिनेमा पर उनके सबसे ज्यादा निबंध हैं। रमाकांत ने फिल्मों पर लिखते हुए शुद्ध मनोरंजन और स्वस्थ मनोरंजन में अंतर स्पष्ट किया है। बसंत त्रिपाठी ने रमाकांत के लेखन के बहाने पूंजी, धर्म और सत्ता के गठजोड़ से सजग रहने आगाह किया।

रमाकांत के व्यक्तित्व के विविध आयामों पर चर्चा करते हुये उषा आठले ने कहा रमाकांत जी अपने संगठन और विचारों के प्रति सदैव प्रतिबद्ध रहे, वे बहुत अच्छे संगठक, आयोजक एवं संचालक हैं। वे दो पीढ़ियों के बीच कभी भेद नहीं किये। उनका व्यक्तित्व बहुत ही सहज, आकर्षक और सौम्य है। वे बेहतर और पारदर्शी इंसान हैं। रमाकांत की जीवनसाथी दीपा श्रीवास्तव ने उनके व्यक्तित्व के अंतरंग पक्षों पर प्रकाश डाला। पारिवारिक जीवन, लेखकीय दायित्व और सांगठनिक जिम्मेदारियों के बीच उनका संतुलन सदैव बना रहा। उन्हें लेखन की प्रेरणा अपनी मां से मिली। उनके सहपाठी और संगठन में लंबे समय तक साथ साथ रहे वरिष्ठ साहित्यकार रवि श्रीवास्तव ने रमाकांत के साथ अपने छात्र जीवन की यादों को साझा किया। उन्होंने कहा कि जो जीवन उन्होंने रमाकांत के साथ बिताया वे क्षण अत्यंत सुखद थे। उनका ज्ञान, चेतना और जानकारी अद्भुत है। वरिष्ठ रंगकर्मी और पत्रकार राजकुमार सोनी ने कहा कि रमाकांत की बौद्धिकता और संवेदना हमें गहरे तक प्रभावित करती है। उनकी विनोदप्रियता हृदय को छूती है। वे कुशल नेतृत्वकर्ता और संगठनकर्ता हैं। उनका पांच दशकों का गौरवशाली सार्वजनिक जीवन हमें प्रेरित करता है।

सत्रांत में जय प्रकाश और राजीव कुमार शुक्ल ने रमाकांत श्रीवास्तव से विभिन्न पक्षों पर संवाद किये, जिस पर उन्होंने बेबाकी से अपना पक्ष रखा। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने

आयोजन समापन के अंत में आभार ज़ापन किया। आज के आयोजन में छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ईश्वर सिंह दोस्त सहित दुर्ग, मिलाई, छत्तीसगढ़ एवं देशभर के विभिन्न शहरों, कस्बों से आये साहित्यकार, रचनाकार एवं पाठकगण उपस्थित रहें। आयोजन को सफल बनाने में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह हिन्दी विभाग से डॉ. बलजीत कौर, डॉ. कृष्णा चटर्जी, प्रो. थानसिंह वर्मा, प्रो. अन्नपूर्णा महतो, डॉ. रजनीश उमरे, डॉ. सरिता मिश्र, डॉ. ओमकुमारी देवांगन, डॉ. लता गोस्वामी, डॉ. शारदा सिंह एवं अन्य विभागों के प्राध्यापकगण, अतिथि व्याख्याता, शोधार्थी, छात्रगण, रासेयो स्वयं सेवक उनके प्रभारी प्रो. जनेन्द्र कुमार दीवान एवं क्रीडा अधिकारी लक्ष्मेन्द्र कुलदीप की सराहनीय भूमिका रही।

प्राचार्य

शास. वि.या.ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

दिनांक 14/09/2023

प्रतिवेदन

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग में संस्कृति विभाग
छ.ग. शासन के सहयोग से एकाग्र रमाकांत का आयोजन

हिन्दी दिवस के अवसर पर साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग छत्तीसगढ़ शासन और हिन्दी विभाग, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में “एकाग्र रमाकांत श्रीवास्तव” पर दो दिवसीय आयोजन किया जा रहा है। उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ईश्वर सिंह दोस्त ने कहा कि छत्तीसगढ़ के समकालीन रचनाकारों पर महत्वपूर्ण चर्चा हमारी योजना में है। इसी के तहत हम लगातार रायपुर और छत्तीसगढ़ के विभिन्न शहरों में समकालीन रचनाकारों पर केन्द्रित कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं।

बीज वक्तव्य देते हुए वरिष्ठ कथाकार शशांक ने कहा कि रमाकांत जी की कहानियां नयी कहानी के दौर से दिखायी देती है। उनकी कहानियों में हमें विद्रोह की आकांक्षा अथवा स्वप्न दिखायी पड़ता है, वे अपनी कहानियों में लोक गाथाओं से पृष्ठभूमि लेकर कथा रचते हैं। उनकी कहानियां अपने समय को प्रतिबिम्बित करती हुई युगबोध का दर्शन कराती है। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने कहा कि हिन्दी दिवस के अवसर आज के समय के महत्वपूर्ण रचनाकार रमाकांत श्रीवास्तव पर आयोजन हमारे लिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने युवाओं को वरिष्ठ साहित्यकारों से सांस्कारिक प्रोत्साहन का भी आह्वान किया। उद्घाटन सत्र का आभार ज्ञापन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने किया।

रमाकांत श्रीवास्तव का कथा संसार पर चर्चा करते हुए प्रभुनारायण वर्मा ने कहा कि वस्तुतः कथा भूमि की तलाश रमाकांत के रचनात्मक विकास की तलाश है। एक दृष्टि सम्पन्न कथाकार किसी भी विषय को कहानी का कथानक बना सकता है। रमाकांत की कहानियों में एक खास वैज्ञानिक और जनवादी दृष्टि है। उनकी कहानियों में मानवीय संबंध, आत्मीय संबंध, हमारे आसपास का परिवेश अपनी पूरी रंगत से मौजूद है। वे अपनी कहानियों में जनपक्षधरता की रक्षा अपना उत्तरदायित्व समझते हैं।

दुर्ग के वरिष्ठ साहित्यकार महावीर अग्रवाल ने रमाकांत जी से अपने पांच दशकों की आत्मीय और पारिवारिक संबंधों का जिक्र करते हुए उनकी रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज भी वे रमाकांत जी से सीखते रहते हैं। उनकी कथाओं में निम्न मध्यम वर्ग के जीवन संघर्ष और स्वप्न

यथार्थ की चिंता मुख्य विषय होते हैं। उनके लेखन पर चर्चा करते हुए मुकेश वर्मा ने कहा कि हम कोई भी घटना देखते हैं, और भूल जाते हैं, लेकिन लेखक कहा कि हम कोई भी घटना देखते हैं, और भूल जाते हैं, लेकिन लेखक भूलता नहीं है। यह उसके मस्तिष्क में संचित हो जाता है और वहीं से उसके लिए कथा का बीजारोपण होता है। उनकी कहानियों का हर पात्र दूसरे पात्र से अलग और अनूठा होता है, जो धीरे-धीरे हमारे भीतर जगह बनाता जाता है। उनकी कहानियों में भंगिमाओं का चित्रण भी विलक्षण है। सत्र का संचालन करते हुए बसंत त्रिपाठी ने उनकी रचनाओं में आमजन की मुश्किलों एवं अभिजन का विरोध रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि रमाकांत का रचना संसार बहुआयामी है। रमाकांत के बहाने उन्होंने स्पष्ट किया कि बाहर के रचनाकार इस बात को गंभीरता से स्वीकारते हैं कि चर्चा के केंद्र में जरूर उत्तर भारत के रचनाकार रहें, लेकिन हिन्दी में गंभीर रचनाएँ मध्य भारत में होती रही हैं, जिसमें मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ शामिल है।

संवाद को आगे बढ़ाते हुए कहानी के वरिष्ठ आलोचक नीरज खरे ने कहा कि कहानी की रचना कहानीकार के अनुभव जगत से उभरती है। रमाकांत की कहानियों के भीतर एक सर्जनात्मक सौंदर्य है। उनकी कहानियों में एक कठोर व्यंग्य और विनोद भी दिखायी देता है। वरिष्ठ आलोचक जयप्रकाश ने कहा कि कोई भी लेखक अंततः अपने समय को लिखता है। रमाकांत का लेखन अपने समय का लंबा आख्यान है। वे आज भी लगातार अपने समय और समाज को लिख रहे हैं। उनकी कहानियों में हमें कमजोर और शक्तिशाली वर्ग का संघर्ष दिखाई पड़ता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि रमाकांत के पास जो भाषा है, वह हिन्दी के किसी और कहानीकार के पास नहीं है।

इस अवसर पर रमाकांत श्रीवास्तव को कथा संसार के अंतर्गत समकालीनता से साक्षात्कार की कथा विधि पर विनोद साव, आनंद बहादुर, दिनेश भट्ट और कैलाश वनवासी ने भी महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये। रमाकांत की कहानियों में मुख्य रूप से किस्सागो है। उनके पात्रों में उनकी जनपक्षधरता रह रहकर झलकती है। उनकी कहानियां इसीलिए आज भी ताजा है क्योंकि उसमें आम आदमी का जीवन संघर्ष है और किस्सागोई है, इस दृष्टि से ग्रामीण भारत के परिवेश पर केन्द्रित उनकी चैम्पियन कहानी कालजयी है।

आज के आयोजन में हिन्दी विभाग के समस्त प्रध्यापकगण, महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकगण, शोधार्थी, छात्र-छात्राएँ, सुधी पाठकगण एवं दुर्ग भिलाई के साहित्यकार बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

प्राचार्य

शास. वि. या. ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

हिंदी विभाग

31-07-2023

प्रतिवेदन

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के हिंदी विभाग द्वारा प्रेमचंद जयंती के अवसर पर 'प्रेमचंद सर्जक एवं विचारक' शीर्षक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि सेवा निवृत्त प्राध्यापक श्री थान सिंह वर्मा थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वागत भाषण देते हुए हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने कहा कि प्रेमचंद के लेखन में यथार्थ और आदर्श का समन्वय है। उनका कथा-साहित्य यथार्थ की जमीन पर लिखा गया आदर्शवादी साहित्य

है। उनके उपन्यासों में मर्यादा, आदर्श, करुणा, कर्तव्य, समाज-सुधार, प्रेम, देश-भक्ति, सत्याग्रह, अहिंसा, स्त्री-समस्या, मध्यवर्गीय व्यक्ति की त्रासदी, कृषक जीवन की समस्याएं, मेहनतकश आमजन का संघर्ष आदि विषयों का संवेदनशील प्रभावोत्पादक चित्रण हुआ है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने कहा कि प्रेमचंद की रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं। प्रेमचंद के साहित्य में भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण है। प्रेमचंद के कथा-साहित्य में उनके युग परिवेश का वास्तविक चित्रण है। भविष्य जब प्रेमचंद युग की ओर देखेगा तब प्रेमचंद का कथा साहित्य उन्हें इस युग की वास्तविकता से परिचित करायेगा। मुख्य वक्ता प्रो. थानसिंह वर्मा का परिचय देते हुए आलोचक जयप्रकाश ने कहा कि प्राध्यापक पद से सेवानिवृत्त वर्मा जी छात्र जीवन से ही साहित्य एवं सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़े रहे वे मूलतः क्रांतिकारी स्वभाव के हैं। शासकीय सेवा में अध्यापक सीमाओं से बंधे रहे वर्मा जी अब स्वतंत्र हैं। वे शुरू से विभिन्न साहित्यिक संगठनों से जुड़े रहे अब उनके पास समाज और साहित्य के लिए पर्याप्त समय है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री थान सिंह वर्मा ने कहा कि प्रेमचंद, कथाकार के साथ एक विचारक भी थे। उनकी कहानियों तथा उपन्यासों में अपने समय के समाज को बदलने की वैचारिक चेतना मौजूद है। गबन उपन्यास में वे देवीदीन खटिक के माध्यम से सवाल खड़ा करते हैं कि "जब तुम सुराज का नाम लेते हो तुम्हारी आँखों के सामने स्वराज का कौन सा चित्र उभरता है?" प्रेमचंद के लिए स्वराज का मतलब केवल अंग्रेजी राज से मुक्ति नहीं है बल्कि उनके लिए स्वराज का मतलब राजनीतिक आजादी के साथ आर्थिक, सामाजिक आजादी से है जिसमें किसानों, मजदूरों, दलितों आदिवासियों, शोषित, वंचित सबके लिए जगह होगी। प्रेमचंद में भारतीय समाज के मनोविज्ञान को बदलने का काम किया, उनमें मानवीय संवेदना जगाया। प्रेमचंद ने दलित, शोषित किसानों, मजदूरों की वकालत करते हुए कहा कि उन्हें भी इंसान समझकर समाज में सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार दिया जाए। यदि ऐसा नहीं होता है तो वे अपना अधिकार संघर्ष कर हासिल करें। इसके लिए उन्हें शिक्षित और संगठित होने की बात कही। जिन बातों को वे अपने कथा साहित्य में नहीं कह पा रहे थे उसके लिए उन्होंने पत्रकारिता का सहारा लिया। हंस, जागरण, जमाना जैसी पत्र-पत्रिकाओं में लेख तथा निबंध लिखकर प्रेमचंद ने समकालीन सामाजिक व्यवस्था पर सार्थक हस्तक्षेप किया। साम्प्रदायिकता, पूँजीवाद, सामंती शोषण, धार्मिक कर्मकांड, अंधविश्वास, स्वाधीनता आन्दोलन, सामुदायिक एकता, राष्ट्रीयता, तथा राष्ट्रवाद, स्वराज का स्वरूप, किसानों के सवाल को अपने लेखी, निबंधों के माध्यम से उठत्या तथा भारतीय समाज को वैचारिक दिशा प्रदान की। प्रेमचंद जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम

तत्कालीन समाज की सुसप्त चेतना को झकझोर कर जगाया, उनमें संवेदना पैदा की। इसीलिए प्रेमचंद का साहित्य समूचे भारतीय कर अमूल्य विरासत है।

उक्त संपन्न कार्यक्रम में डॉ रजनीश उमरे, डॉ सरिता मिश्र, डॉ ओमकुमारी देवांगन, प्रियंका यादव, बेलमती, लक्ष्मीन चौहान, निर्मला पटेल, तरुण साहू, युगेश देशमुख, जितेंद्र कुमार साहू, संग्राम सिंह निराला के साथ बड़ी संख्या में हिन्दी साहित्य के शोधार्थी व महाविद्यालय के विद्यार्थी शामिल थे कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्णा चटर्जी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. बलजीत कौर ने किया।

प्राचार्य

शास. वि. या. ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

दिनांक 22.08.2023

प्रतिवेदन

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के जन्म शताब्दी के अवसर पर "हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य" पर केंद्रित व्याख्यान का आयोजन महाविद्यालय के विवेकानंद सभागार में किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं अतिथियों का स्वागत किया गया तथा विनोद साव के नव प्रकाशित संग्रह 'विनोद साव की चयनित व्यंग्य रचनाएँ' का विमोचन मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया। अपने स्वागत उद्बोधन में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने परसाई के रचना संसार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि परसाई जी हिंदी के पहले रचनाकार थे जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया। उनकी रचनाएँ सामाजिक पाखंड और रूढ़िवाद की खिल्ली उड़ाते हुए विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप से प्रस्तुत करती हैं।

डॉ. जय प्रकाश ने अपने वक्तव्य में बताया कि सबसे अधिक पढ़े जाने वाले लेखकों में प्रेमचंद एवं परसाई की गणना की जाती है। उनके लेखों में उनके प्रतिकार का रूप स्पष्ट दिखलाई देता है। उनकी रचनाएँ नशतर की भाँति चुभने वाली हैं। अपनी रचना के माध्यम से परसाई जी जनता से सीधे संवाद करते थे।

हिंदी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका बलजीत कौर ने मुख्य वक्ता विनोद साव का परिचय दिया। अपने वक्तव्य में अतिथि वक्ता विनोद साव ने हिंदी व्यंग्य एवं हरिशंकर परसाई पर अपने विचार रखते हुए कहा कि परसाई के लेखन में जीवन अनुभव के अनेक सूत्र भरे हैं, इसलिए वे सामान्य पाठकों को भी आकर्षित करते हैं। हिंदी भाषियों के लिए गर्व की बात है कि दुनिया की किसी भी भाषा में परसाई

जैसा समर्थ व्यंग्यकार नहीं हुआ। वे छोटी रचनाएँ लिखकर बड़े रचनाकार हुए। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने परसाई जी से जुड़े अपने जीवन संस्मरणों की चर्चा करते हुए जानकारी दी कि सागर विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान परसाई जी के साथ टहलते-घूमते उनके विचारों एवं साहित्य से परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला। वे प्रतिकार के रचनाकार थे। इस अवसर पर महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र अजय साहू को महाविद्यालय परिवार द्वारा सम्मान हेतु आमंत्रित किया गया था। अजय साहू का परिचय देते हुए उनके मित्र एवं महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ. रजनीश उमरे ने जानकारी दी कि श्री साहू का चयन रूस की राजधानी मास्को में तीन वर्षों के लिए हिंदी अध्यापक के रूप में केंद्रीय विद्यालय संगठन नई दिल्ली द्वारा किया गया है। यह महाविद्यालय के साथ-साथ दुर्ग शहर और पूरे छत्तीसगढ़ के लिए गौरव का विषय है।

उक्त कार्यक्रम में महाविद्यालय के शोधार्थी एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने भी परसाई जी पर अपना मंतव्य रखा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्राध्यापक ओमकुमारी देवांगन, सरिता मिश्रा, प्रियंका यादव, शारदा सिंह, लता गोस्वामी के साथ बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्णा चटर्जी ने एवं आभार प्रदर्शन अन्नपूर्णा महतो ने किया।

प्राचार्य

शास. वि. या. ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

दिनांक 08.09.2023

प्रतिवेदन

साहित्य सत्ता का पोषक नहीं होता

हिंदी विभाग द्वारा साहित्य परिषद का गठन

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा साहित्य परिषद का गठन किया गया इस अवसर पर साहित्य का लोकतंत्र विषय पर केंद्रित व्याख्यान का आयोजन महाविद्यालय के विवेकानंद सभागार में किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. ईश्वर सिंह 'दोस्त' थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ एस.एन.झा ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण-दीप प्रज्ज्वलन द्वारा किया गया तत्पश्चात विभाग के सदस्यों द्वारा अतिथि एवं प्राचार्य का स्वागत किया गया।

अपने स्वागत उद्बोधन में हिंदी के विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने साहित्य परिषद गठन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए तथा विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि लोकतंत्र मानवीय मूल्यों पर आधारित है। साहित्य का सर्जक हमेशा आम व्यक्ति होता है, वह अपने अनुभव, अध्ययन, चिंतन एवं मनन से जब विचार करता है तब वह सर्जक की भूमिका का निर्वाह करता है। साहित्य कभी भी सत्ता का पोषक नहीं होता। उसका पक्ष सदा प्रतिपक्ष का होता है।

महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ एस.एन.झा ने साहित्य परिषद के पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की साहित्य परिषद के अध्यक्ष के रूप में ओमप्रकाश एम ए तृतीय सेमेस्टर, उपाध्यक्ष इंदू एम ए प्रथम सेमेस्टर सचिव भूषण रावटे एम ए तृतीय सेमेस्टर, सहसचिव भूमिका ध्रुव एम ए प्रथम सेमेस्टर मनोनीत किए गए। पदाधिकारी को शुभकामना देते हुए उन्होंने कहा कि नेतृत्व करने का तथा दायित्व निर्वहन करने का अवसर देता है। युवाओं में ऊर्जा होती है, यह पद उन्हें अपनी उर्जा दिखाने का अवसर भी देता है। आलोचक डॉ. जयप्रकाश ने अतिथि वक्ता का परिचय देते हुए विषय पर अपना संक्षिप्त मंतव्य रखा।

मुख्य अतिथि की आसंदी से अपने विचार रखते हुए साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष डॉ. ईश्वर सिंह दोस्त ने शब्दों के अर्थ और मर्म तथा व्यवहार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राजनीति और लोकतंत्र शब्द के मायने बदल गए हैं। लोकतंत्र अपने मूल स्वभाव और अर्थ में अराजक नहीं है तथा राजनीति शब्द भी एक सार्थक अर्थ देता है। आधुनिक साहित्य में व्यक्ति ही प्रमुख है, व्यक्ति का संघर्ष समुदाय समाज तथा अपने आप से भी है। साहित्य में व्यक्ति, समुदाय और समाज का प्रतीक और प्रतिनिधि है। व्यक्ति के जीवन का अनुभव साहित्य की रचनात्मकता का स्रोत है।

उक्त कार्यक्रम में महाविद्यालय के शोधार्थी एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में ओमप्रकाश तथा मोरध्वज ने मंच से अपनी स्वरचित कविता का पाठ किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्राध्यापक प्रो. अन्नपूर्णा महतो, डॉ पद्मावती, प्रो. जैनेंद्र दीवान, डॉ. रजनीश उमरे, डॉ ओमकुमारी देवांगन, डॉ. सरिता मिश्रा, डॉ शारदा सिंह, डॉ लता गोस्वामी के साथ बड़ी संख्या में महाविद्यालय के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ कृष्णा चटर्जी ने एवं प्राध्यापिका डॉ बलजीत कौर ने आभार प्रकट किया।

प्राचार्य

शास.वि.या.ता स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ. ग.)

दिनांक 30.10.2023

प्रतिवेदन

बहुआयामी भारतीय संस्कृति - प्रेमलता देवी

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग के हिन्दी विभाग द्वारा “भारतीयसंस्कृति” विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गुजरात, गांधी नगर में पदस्थ सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रेमलता देवी थी। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. कृष्णा चटर्जी ने अपने स्वागत उद्बोधन में मुख्य वक्ता का परिचय सभागार में उपस्थित श्रोताओं को दिया।

भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान देते हुए डॉ. प्रेमलता देवी ने कहा कि अपने वजूद को बचाये रखने के लिए हमें अपनी संस्कृति को बचाए रखना है। वसुदैव कौटुम्बकम् हमारा आदर्श और दृष्टिकोण है, जो हमारी जीवन शैली का अंग और संस्कार है। सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरायमय यहाँ की शिक्षा और संस्कार का अंग है। कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह एवं हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने प्रमुख वक्ता डॉ. प्रेमलता देवी को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का आभार वक्तव्य में डॉ. अभिनेष सुराना ने कहा कि भारतीय संस्कृति का विश्व संस्कृति में अहम स्थान है। भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृति को प्रभावित करता है।

उक्त कार्यक्रम में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. बलजीत कौर, डॉ. सलूजा मैडम, डॉ. अनुपमा अस्थाना, डॉ. कुलकर्णी मैडम, डॉ. जय प्रकाश साव, प्रो. अन्नपूर्णा महतो, डॉ. सरिता मिश्र, डॉ. ओम कुमारी, डॉ. शारदा सिंह, डॉ. लता गोस्वामी और महाविद्यालय के अन्य विभाग के प्राध्यापकगण एवं शोधार्थीगण और विद्यार्थीगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजू सिन्हा ने किया।

विभागाध्यक्ष
शास.वि.या. ता.स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)
(छ.ग.)

प्राचार्य
शास.वि.या. ता.स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग

प्रतिवेदन

फाग का रंग लोक का रंग है-डॉक्टर जीवन यदु

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग में दिनांक 16 मार्च 2022 को हिंदी विभाग द्वारा 'फाग का लोकरंग' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। आरंभ में विभाग के अध्यक्ष डॉ.अभिनेष सुराना ने अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया तथा कार्यक्रम के स्वरूप पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.आर एन सिंह ने आयोजन के सफलता की शुभकामना देते हुए कहा कि लोक पर्वों का सांस्कृतिक महत्व है हमारे लोक

पर्व लोगों को आपस में जोड़ते हैं। फाग गीत पर केंद्रित इस आयोजन से उसके लोक तथा सांस्कृतिक पक्ष का उद्घाटन होगा इससे हमारे छात्र तथा शोधार्थी लाभान्वित होंगे। इसके पश्चात 'फाग का लोकरंग' विषय पर आधारित व्यक्त वक्तव्य देते हुए विभाग के प्राध्यापक डॉ. जयप्रकाश ने कहा - फाग का पर्व प्रकृति और मनुष्य के संबंध को परिभाषित करता है। प्रकृति की सहजता, सरलता मनुष्य जीवन का एक हिस्सा है लेकिन सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य और प्रकृति का संबंध टूट सा गया है। उन्होंने कहा कि पिछले दो-तीन दशकों से देश में पर्व एक औपचारिक कर्मकांड में बदलने लगा है। सही मायने में लोक पर्वों का जन्म लोगों को आपस में जोड़ने के लिए हुआ था लेकिन आज उसका स्वरूप खंडित हो गया है। फाग हमारी चेतना का विस्तार करता है इसलिए फाग गीतों के सहजता, सरलता को आज बनाए रखने की जरूरत है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. जीवन यदु ने कहा कि फाग का रंग लोक का रंग है जो फागुन मास आते ही सबको अपने रंग में सराबोर कर देता है यहां सब बराबर हो जाते हैं क्या अमीर और क्या गरीब। उन्होंने आगे कहा कि यह लोक पर्व प्रेम तथा सद्भाव का संदेश लेकर आता है। लोक साहित्य मर्मज्ञ डॉ.पीसी लाल यादव ने कहा कि फाग का पर्व प्रकृति और मनुष्य के साहचर्य का पर्व है। फागुन के महीने में बासंती पवन के साथ सब के सब झूमते दिखाई देते हैं। उन्होंने फाग गीत की दो पंक्तियों का उल्लेख करते हुए कहा -

पिंवरी पहिरे सरसों झूमें
पुरवड़या बड़हा झूमें
ढोलक बजावे ठेमना चना।

फाग का पर्व ग्राम संस्कृति की झांकी है उन्होंने होलिका दहन के मिथकीय प्रतीक का उल्लेख करते हुए कहा यह शोषक वर्ग से संघर्ष और मुक्ति का पर्व है। यह केवल राधा कृष्ण तथा अवध के राम तक सीमित नहीं है इसमें प्रकृति, मानवीय प्रेम से लेकर राष्ट्र राष्ट्रीयता और आजादी की चेतना भी समाहित है। कार्यक्रम में डॉ.अनसूईया अग्रवाल (महासमुंद) डॉ. शंकरमुनि राय (राजनांदगांव) रजत कृष्णा (बागबाहरा) ने अपने विचार व्यक्त किए। आरंभ में डॉ.रजनीश उम्रे के निर्देशन में स्थानीय फाग मंडली द्वारा फाग गीतों का गायन किया गया। अतिथि वक्ताओं का परिचय डॉ. सरिता मिश्र एवं कुमारी प्रियंका यादव ने दिया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र झारखंड तथा छत्तीसगढ़ के 100 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया तथा अपने शोध पत्रों का वाचन किया और फाग गीतों के विविध विषय - फाग गीतों में प्रयुक्त वाद्य यंत्रों, फाग गीतों का

लोक स्वरूप, फाग गीतों में आध्यात्मिकता, फाग गीतों में इतिहास तथा कृषक संस्कृति पर अपने ढंग से विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापक डॉ.बलजीत कौर प्रो. थानसिंह , डॉ.कृष्णा चटर्जी के अलावा बड़ी संख्या में शोध छात्र सम्मिलित हुए ।कार्यक्रम का संचालन डॉ.रजनीश उमरे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ.ओम कुमारी ने किया।

प्राचार्य

शास. वि. या. ता.स्नात.स्व.महावि. दुर्ग (छ.ग.)